शिक्षा एवं खेल गतिविधियां (Education & Sports Activities)

महाराणा प्रताप संस्थान अपनी स्थापना वर्ष से ही शिक्षा एवं खेल गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से कार्य करता रहा है। संस्थान के प्रारम्भिक उद्देश्यों में शिक्षा एवं खेल गतिविधियों का प्रोत्साहन शामिल रहा है। विभिन्न विषयों पर निरंतर सेमीनार, कार्यशालाएं, पोस्टर प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता, नारा लेखन प्रतियोगिता, फैशन शो, रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन संस्थान द्वारा निरंतर किया जाता रहा है। विद्यार्थियों के लिए विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन स्थापना के प्रारम्भिक वर्षों में किया गया।

राज्य स्तरीय खेल कार्यशाला में सम्बोधित करते हुए संस्थान अध्यक्ष अमृतसिंह भाटी एवं सोमेन्द्र शर्मा, हरिमोहन शर्मा, पूर्व खेल मंत्री रोहिताश शर्मा, पूर्व पुलिस महानिदेशक किशन मीणा एवं जितेन्द्र पालसिंह

विद्यालय में आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता में विजेता छात्रा को पुरस्कृत करते प्रधानाचार्या

वर्ष 2006 से जयपुर बाल श्रमिक परियोजना संस्था के सहयोग से राष्ट्रीय बाल श्रमिक परियोजना के तहत दो बाल श्रमिक शिक्षण एवं पुर्नवास केन्द्रो की स्थापना की गई। इन केन्द्रों पर बच्चों को शिक्षण के साथ पुर्नवास हेतु व्यवसायिक प्रशिक्षण प्रदान कर किया गया है। गरीबी के कारण बचपन में ही मजदूरी करने को विवश होना पड़ता है और अधिकांश पारिवारिक धन्धे में मां–बाप का हाथ बंटाने का काम बच्चे करते हैं। जयपुर के आरी–तारी, नगीना घिसाई, ब्लाक प्रिण्टींग, होटल, रेस्टोरेंट, चाय के ढ़ाबे आदि व्यवसायों में अनेक बाल श्रमिक नियोजित हैं। इनकी मासूमियत और बचपन अभी से खो गया मजदूरी की चिंता में। ऐसे ही बच्चों को जेहन में रख कर जयपुर बाल श्रमिक संस्था के साथ महाराणा प्रताप अध्ययन एवं जन कल्याण संस्थान जयपुर ने पारस्परिक समझ का ज्ञापन (MOU) पर दिनांक 20.02.06 को हस्ताक्षर किये।

ज्ञापन के तहत जयपुर शहर के वार्ड नं. 33, 34, 25 व 36 में बाल श्रमिकों का सर्वे किया गया। सर्वे में अल्पसंख्यक वर्ग के बच्चे आरी–तारी तथा नगीना घिसाई का कार्य परिवार के साथ करते हुए मिले। धन्नादास की बगीची आदर्श नगर क्षेत्र में 67, मर्दान खां की गली एमडी रोड़ में 59 तथा चेतना नगरी सेठी कालोनी क्षेत्र में 99 बाल श्रमिक सर्वे में पाये गये।

सर्वे के आधार पर दिनांक 14.08.06 को बाल श्रमिक शिक्षण एवं पुनर्वास केन्द्र की स्थापना के लिए संस्थान ने (MOU) पर हस्ताक्षर किये। एस–48 धन्नादास की बगीची में महाराणा प्रताप अध्ययन एवं जन कल्याण संस्थान की ओर से दो केन्द्रों की स्थापना 16.08.06 को की गई। इन केन्द्रों का विधिवत उद्घाटन तत्कालीन जिला कलेक्टर राजेश्वर सिंह ने दिनांक 23.08.09 को किया। इस अवसर पर जिला कलेक्टर ने अल्पसंख्यक समुदाय को आह्वान किया कि वे अपने बच्चों को तालीम की रोशनी से जोड़े ताकि वे आगे चलकर देश के विकास और खुशहाली में अपना सक्रिय योगदान दे सकें। समारोह में जयपुर बाल श्रमिक परियोजना संस्था के परियोजना निदेशक जीवराज सिंह, संस्थान अध्यक्ष अमृतसिंह भाटी तथा सचिव आई.एन चटर्जी ने भी विचार प्रकट किये।

धन्नादास बगीची के प्रथम केन्द्र पर आरम्भ में परियोजना समन्वयक अंजुम कुरेशी एवं 4 शिक्षा अनुदेशक व 2 व्यवसायिक अनुदेशक, 2 लेखाकार तथा 2 सहायक कर्मचारी नियुक्त किये गये। केन्द्र पर शिक्षा के साथ–साथ प्रथम दिन से ही बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने की दृष्टि से व्यवसायिक प्रशिक्षण प्रारम्भ किया गया जिसमें कटिंग, टेलरिंग, क्राफ्ट, मेहन्दी, झूमर, बंधनवार, ब्लाक प्रिन्टिग तथा पेन्टिग आदि शामिल थे। राज्य सरकार की ओर से पांचवी कक्षा तक के बच्चों को उपलब्ध दोपहर का भोजन (Mid-day-meal) भी प्रथम दिन से ही बच्चों को उपलब्ध कराया गया। जिसमें बच्चों को चावल, दलिया, रोटी–सब्जी आदि परोसे गये। यह कार्यक्रम दिनांक 31.08.07 तक संस्थान द्वारा चलाया गया तत्पश्चात राजस्थान सरकार के दिशानिर्देशों के अनुरूप यह जिम्मेदारी जयपुर शहर में अक्षय पात्र फाउण्डेशन को सौंप दी गई जो अप्रेल 2009 में परियोजना समाप्ति तक जारी रही।

दिनांक 14 नवम्बर 2006 से 20 नवम्बर 2006 तक आयोजित बाल श्रम प्रतिकार एवं जन चेतना कार्यक्रम में संस्थान के दोनों केन्द्रों के बच्चों ने उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यक्रम में हुई चित्रकला, प्रश्नोतरी, वाद–विवाद, नाट्य, निबंध तथा विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं में संस्थान के बच्चों ने पुरस्कार भी जीते।

केन्द्रों के बच्चों की स्वास्थ्य जांच प्रत्येक माह राज्य सरकार द्वारा नियुक्त चिकित्सक द्वारा की गई। स्वास्थ्य जांच में डा. अजय जैमिनी तथा डा. कमलेश छोलक ने बाल श्रमिकों में स्वास्थ्य चेतना का संचार किया तथा उत्तम स्वास्थ्य के तरीके बताये।

गणतंत्र दिवस 2007 को हुये आयोजन में जयपुर बाल श्रमिक पुनर्वास परियोजना के निदेशक जीवराज सिंह ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया तथा बच्चों का उत्साह वर्धन किया इस अवसर पर संस्थान अध्यक्ष अमृतसिंह भाटी ने कार्यक्रम में भाग लेने वाले बच्चों को उपहार बांटे। बच्चों ने कुशल शिक्षकों के निर्देशन में शानदार सांस्कृतिक कार्यक्रमों की

प्रस्तुति देकर दिखला दिया कि उन्हें भी अगर अवसर प्रदान किया जाये तो वे किसी के कम नहीं हैं।

बाल श्रमिक शिक्षण एवं पुनर्वास केन्द्र में 16 जून 2007 को आयोजित महाराणा प्रताप जयंती पर हुये आयोजन में विधायक कालीचरण सर्राफ ने कहा कि समाज का हर आदमी अपने सामाजिक दायित्वों को ध्यान में रखते हुए समाज की प्रगति और विकास में योगदान करे तो ही किसी भी राष्ट्र का विकास संभव है। संस्थान अध्यक्ष अमृत सिंह भाटी ने महाराणा प्रताप के जीवन संघर्ष की चर्चा करते हुए युवाओं से अपने आत्म सम्मान के लिए आवश्यकता पड़ने पर त्याग करने की बात कही। समारोह में वाणी संस्था के सुनिल शर्मा, पुनर्वास केन्द्र की समन्वयक अंजुम कुरेशी, अरविन्दसिंह व नरेन्द्रसिंह आदि ने भी विचार व्यक्त किये।

स्वाधीनता दिवस 2007 पर हुए आयोजन में राष्ट्रीय ध्वज फहराया तथा बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर संस्थान अध्यक्ष अमृतसिंह भाटी, सचिव आई.एन. चटर्जी सहीत अनेक गणमान्य नागरिक तथा अभिभावक उपस्थित थे।

बाल श्रमिक शिक्षण एवं पुनर्वास केन्द्र के सभी बच्चों की छात्रवृति वितरण के लिए भारतीय स्टेट बैंक की राजा पार्क शाखा में बचत खाते खुलवा कर दो लाख एक हजार दो सौ सैंतालिस रूपये की राशि जमा करवाई गई। सभी खाते मार्च माह में खुलवाये गये जिनमें जयपुर बाल श्रमिक परियोजना संस्था ने छात्रवृति तथा परियोजना के समस्त खर्चे वहन किये।

संस्थान के केन्द्रों पर पुनर्वासित बाल श्रमिकों को औपचारिक शिक्षा के साथ–साथ विभिन्न प्रकार का व्यवसायिक प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया ताकि भविष्य में अपने पैरों पर बाल श्रमिक खड़े हो सकें।

संस्थान ने केन्द्र में बच्चों के तीन साल अध्ययन पूरा करने के बाद उनका प्रवेश कक्षा 5 व 6 में राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, शेखावाटियों का घेर, जयपुर में करवाया। अप्रेल 2009 में आयोजित किये गये प्रवेशोत्सव के दौरान जयपुर बाल श्रमिक पुनर्वास परियोजना के निदेशक जीवराज सिंह भी उपस्थित थे इस दौरान संस्थान की ओर से बच्चों को उपहार स्वरूप पुस्तकों, अभ्यास पुस्तिकाओं, पेन्सिल, रबड़ आदि का वितरण किया गया। केन्द्र के 86 बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़कर संस्थान ने विशेष उपलब्धि अर्जित की।